के वि वि आयोग
CERC

सौदामिनी

अप्रैल – जून, 2017 | केन्द्रीय विद्युत विनियामक आयोग | खण्ड–I अंक–13

प्रस्तावना

(सनोज कुमार झा)
सचिव एवं अध्यक्ष रा.भा.का. समिति

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता है कि हमारे केन्द्रीय विद्युत विनियामक आयोग द्वारा हिन्दी गृह पत्रिका **''सौदामिनी''** का नियमित प्रकाशन किया जा रहा है।

मेरा यह मानना हे कि राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार और सरकारी कामकाज में राजभाषा हिन्दी के प्रति अभिरूचि विकसित करना इस पत्रिका का मुख्य उद्देश्य रहा है। **''सौदामिनी''** हमारे समस्त स्तर के अधिकारियों/कर्मचारियों में छिपी सृजनात्मक प्रतिभा की अभिव्यक्ति का सशक्त मंच है।

इस पत्रिका में आयोग की विभिन्न गतिविधियों, कार्यक्रमों एवं कार्यकलापों की सम्यक जानकारी उपलब्ध करवाई जाती है जिससे प्रत्येक स्टाफ सदस्य लाभान्वित होता है। इस पत्रिका में प्रकाशित सामग्री रोचक, ज्ञानवर्द्धक एवं स्तरीय होती है। निस्संदेह इस पत्रिका का सम्पादक मंडल अपनी सुरूचि संपन्नता से प्रकाशनार्थ सामग्री का चयन करता है जिसके लिए वे बधाई के पात्र हैं। इसके अलावा इस पत्रिका के माध्यम से जिन रचनाकारों ने अपनी लेखन प्रतिभा का परिचय दिया है वे भी धन्यवाद के पात्र हैं।

इस अवसर पर मेरा समस्त पाठकों से यह भी अनुरोध है कि वे **''सौदामिनी''** के इस अंक का मूल्यांकन करेंगे और इसे अधिक बेहतर बनाने के लिए अपने अमूल्य सुझावों से भी हमें अवगत करवाएंगे। मैं आपके इस महत्वपूर्ण एवं सार्थक कार्य और आपके अनवरत सफल प्रयासों की सराहना करता हूँ।

पत्रिका के इस नवीनतम अंक के सफल प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

हिंदी कार्यशाला/सेमीनार का आयोजन – 05 मई, 2017

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में लिए गए निर्णय एवं आयोग के प्रस्तावित वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार हिंदी कार्यशाला/सेमीनार का आयोजन **दिनांक 05 मई, 2017** को केन्द्रीय विद्युत विनियामक आयोग में किया गया। इस कार्यशाला का उद्घाटन श्री सनोज कुमार झा, सचिव एव अध्यक्ष–राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा उद्घाटन संबोधन से किया गया। इस हिंदी कार्यशाला/सेमिनार में मूल पत्राचार में वृद्धि करने, धारा 3(3) के शत प्रतिशत अनुपालन करने एवं मानक मसौदों के प्रयोग पर बल दिया गया। इसके साथ ही प्रतिभागियों को राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय की प्रोत्साहन पुरस्कार योजनाओं के विस्तार से जानकारी दी गई। कार्यशाला/ सेमीनार में बड़ी संख्या में वरिष्ठ अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया जिसमें हिंदी के रोजमर्रा के कामकाज में आने वाली व्यवहारिक समस्याओं पर खुलकर चर्चा की गई और उपस्थित सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को विद्युत क्षेत्र से संबंधित शब्दावली और राजभाषा से संबंधित जानकारी वितरित की गई। इस हिंदी कार्यशाला/सेमिनार में ''कामकाजी हिंदी'' विषय पर व्याख्यान देने के लिए भाषा विशेषज्ञ को भी आमंत्रित किया गया।

हिंदी कार्यशाला/सेमीनार का उद्घाटन भाषण देते हुए श्री सनोज कुमार झा, सचिव एवं अध्यक्ष रा.भा.का.स.

के वि वि आयोग
CERC

सौदामिनी

अप्रैल – जून, 2017 | केन्द्रीय विद्युत विनियामक आयोग | खण्ड–I अंक–13

हिंदी कार्यशाला/सेमीनार के दौरान अधिकारीगण/कर्मचारीगण की उपस्थिति

आशुभाषण प्रतियोगता – 13 जून, 2017

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में लिए गए निर्णय एवं आयोग के राजभाषा संबंधित प्रस्तावित वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार **दिनांक 13 जून, 2017 को आशुभाषण प्रतियोगिता** का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में सामयिक महत्व के विषयों जैसे साहित्य, समाज, संस्कृति, राजभाषा नीति, राजनीति, सिनेमा आदि विभिन्न क्षेत्रों की सामान्य जानकारी को शामिल किया गया। इस प्रतियोगिता का उद्घाटन श्री एम.के. आनन्द, प्रमुख (वित्त) द्वारा किया गया। इस आशुभाषण प्रतियोगगिता के निर्णायक मंडल में आयोग के दो अधिकारियों सहित एक विशेषज्ञ को भी आमंत्रित किया गया। आयोग के सभी स्तर के स्टाफ सदस्यों ने इस प्रतियोगिता में भाग लिया। इस प्रतियोगिता में कुल चार प्रतिभागियों का पुरस्कार के लिए चयन किया गया। प्रतियोगिता में कुल 20 लोगों ने भाग लिया।

आशुभाषण प्रतियोगिता का उद्घाटन भाषण देते हुए श्री एम.के. आनन्द (प्रमुख – वित्त)

आशुभाषण प्रतियोगिता : कुछ झलकियां

के वि वि आयोग
CERC

सौदामिनी

अप्रैल – जून, 2017 | केन्द्रीय विद्युत विनियामक आयोग | खण्ड–I अंक–13

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक – 24 मई, 2017

आयोग के स्तर पर गठित राजभाषा कार्यान्वयन समिति की जून 2017 को समाप्त तिमाही बैठक दिनांक 24.05.2017 को आयोग के सचिव एवं अध्यक्ष रा.भा.का.स. श्री सनोज कुमार झा की अध्यक्षता में आयोजित की गई। समिति के अध्यक्ष महोदय द्वारा सभी प्रभागों की पिछली तिमाही हिंदी प्रगति की जानकारी प्राप्त की गई। इस तिमाही बैठक में सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन और हिंदी के प्रचार प्रसार पर विशेष बल दिया गया एवं हिंदी की विभिन्न गतिविधियों तथा कार्यक्रमों की रूपरेखा भी तैयार की गई।

चर्चा के दौरान अध्यक्ष महोदय ने यह सुझाव दिया कि इन कार्यक्रमों के प्रतिभागियों की हिंदी में कार्य बढ़ाने की दृष्टि से भी सम्यक समीक्षा की जाए। उन्होंने कहा कि इस बात का भी मूल्यांकन किया जाए कि हिंदी भाषा का अधिक से अधिक प्रयोग कार्यालय में किया जा रहा है। इसके अलावा रूटीन किस्म के पत्र/परिपत्र/टिप्पणियों आदि के लिए हिन्दी के प्रयोग को सुनिश्चित करने पर भी बल दिया गया।

इस बैठक में राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सभी सदस्यों ने भाग लिया।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक के दौरान विचार–विमर्श

केविविआ परिसर में योगाभ्यास कार्यक्रम
अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस – 21 जून, 2017 के उपलक्ष्य में

केन्द्रीय विद्युत विनियामक आयोग के कार्यालय परिसर में अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस (21 जून, 2017) के उपलक्ष्य में दिनांक 21 जून, 2017 को प्रातः 8:00 बजे से 10:00 बजे तक योगाभ्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस योगाभ्यास कार्यक्रम में आयोग के वरिष्ठ अधिकारीगण एवं सभी स्तर के स्टाफ ने भाग लिया। **इस अवसर पर पीजी कॉलेज, बदरपुर के प्रोफेसर (योग विशेषज्ञ) डॉ. सत्यंत कुमार को आमंत्रित किया गया।** डा. सत्यंत कुमार ने उपस्थित स्टाफ को योग के महत्व पर विस्तृत जानकारी प्रदान करते हुए व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक व आत्मिक विकास के लिए इसे जीवन शैली से जोड़ने का आहवान किया। इस योगाभ्यास कार्यक्रम में योग विशेषज्ञ द्वारा विभिन्न उपयोगी आसनों जैसे ताड़ासन, वज्रासन अर्द्धचक्रासन, नौकासन, पवनमुक्तासन, हलासन, प्राणायाम, कपालभाती, अलोम–विलोम, भ्रामरी आदि के बारे में सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक जानकारी प्रदान की गई।

इस कार्यक्रम के माध्यम से व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक विकास तथा रोजमर्रा के कार्य में स्फूर्ति एवं उत्साह के महत्व को रेखांकित किया गया। इस कार्यक्रम में आमंत्रित योग विशेषज्ञ ने योग क्रियाओं की समुचित व्यवहारिक जानकारी दी और सभी स्टाफ सदस्यों ने उनका अनुकरण किया। यह योगाभ्यास कार्यक्रम अत्यंत सफल रहा।

योगाभ्यास कार्यक्रम : कुछ महत्वपूर्ण झलकिया

के वि वि आयोग
CERC

सौदामिनी

अप्रैल – जून, 2017 | केन्द्रीय विद्युत विनियामक आयोग | खण्ड–I अंक–13

चिन्तनपरक लेख

आत्म विस्तार ही सुख का आधार है

किसी महापुरुष ने कहा है कि संकीर्णता या क्षुद्रता ही दुख है जबकि विशालता एवं उदारता सुख है। हालांकि सामाजिक दृष्टि से देखे तो यह उक्ति कुछ असंगत व तर्कहीन लग सकती है। चूंकि बड़े समाजिक सराकारों से जुड़ा व्यक्ति और अपने बड़े उद्देश्यों के लिए ईमानदारी कर्त्तव्यनिष्ठा से लगे व्यक्ति के मार्ग में स्वतः कठिनाइयाँ आने लगती हैं। लेकिन आध्यात्मिक दृष्टि से यही स्थितियां अपना अर्थ बदलने लगती हैं और नए व व्यापक अर्थ खोजने लगती है। हम दुखी होते ही इसलिए हैं कि हम सब कुछ अपने ढंग से और सीमित नजरिए से होते देखना चाहते हैं। हमारी समस्त धारणाओं का घेरा हमारे 'आत्म' के आसपास केन्द्रित हो जाता है। 'आत्म' से अभिप्राय व्यक्ति की उस चेतना से है जो अपने–पराए का भेद करती है। आत्म विकास के लिए सबसे जरूरी है कि व्यक्ति अपनी आदिम प्रवृत्तियों जैसे काम, क्रोध, लोभ, मोह को समझे और उस पर नियंत्रण या विजय प्राप्त करने की ईमानदार कोशिश करें।

वस्तुतः आध्यात्मिक चेतना का आधार भी व्यक्तिगत मान्यताएं ही होती हैं जो व्यापक सामाजिक मूल्य–मानों में अपनी भूमिका का निर्धारण करती हैं। आचार–व्यवहार का अपनी आंतरिकता से तालमेल बिठाने के बाद हमारी चेतना विकसित होने लगती है। परिणामतः हम अपनी स्वार्थपरक, संकीर्ण व अनुदार वृत्तियों से उबरने लगते हैं। सोच व दृष्टि का यही विकास आत्म–विस्तार का मूल स्रोत है। इससे निकृष्ट व ओछी भावनाओं के स्थान पर उदार एवं निष्कलुष भावनाओं का आकाश खुलने लगता है। तभी हमारे संत महात्मा इस बात पर हमेशा बल देते आए हैं कि व्यक्ति की कथनी–करनी में समानता होनी चाहिए। कथनी करनी में भेद से व्यक्ति में पाखंड, धूर्तता, मक्कारी व झूठ जैसी प्रवृत्तियां स्वतः बल पकड़ने लगती हैं। हम दुनिया से झूठ बोल सकते हैं लेकिन अपने से न तो हम भाग सकते हैं और न ही किसी तरह बच सकते हैं। व्यक्ति का यही द्वैध व्यक्ति के आत्म–विस्तार में बाधक बनता है। व्यक्ति ज्यों–ज्यों अपने प्रति ईमानदार होता जाएगा उसी अनुपात में वह अपनी योग्यताओं व क्षमताओं का सही परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकन करने में समर्थ होने लगेगा।

हम जो भी बोले उसमें हमारी आंतरिकता झलकनी चाहिए तभी हम अपने कथन के प्रति जुड़ाव का भाव महसूस करेंगे। महज दूसरे को प्रभावित करने के लिए कह गए कथन का कोई अर्थ नहीं चूंकि निकट भविष्य में हमारा व्यवहार हमारे कथन की असलियत को सामने ले ही आएगा। आत्म–विस्तार का अर्थ ही कुल इतना है कि हम उन्हीं कार्यों को महत्व दें जो व्यापक हितों को साध सकें। किसी तरह की चालबाजी या झूठ का सहारा लेकर अपना हित साधने वाला व्यक्ति सांसारिक दृष्टि से भले ही अपना उल्लू सीधा करके सफल हो जाता है पर वह आत्म–विस्तार के बाद पाए गए उस आनंद व सुख से वंचित ही रहेगा जो अपनी दुष्प्रवृत्तियों पर विजय पाने से प्राप्त होता है।

यह एक तथ्य है कि अपने–अपने आत्म के अनुरूप ही व्यक्ति जगत में व्यवहार करता है। अति स्वार्थी व संकीर्ण मनोवृत्ति वाला व्यक्ति केवल अपने लिए ही जिएगा और उसकी सारी चिंताएं अपने तक सीमित होंगी। इस व्यक्ति की अपेक्षा थोड़ा अधिक जागृत व अपने कर्त्तव्यों को विस्तार देने वाला व्यक्ति अपने परिवार की खुशहाली के लिए प्रयत्नशील होगा और अपने आनंद व सुख के स्रोत का दायरा व्यापक बना लेगा। इससे अधिक चेतना संपन्न व वृहत्तर सामाजिक सरोकार वाला व्यक्ति समाज को आगे ले जाने वाले कार्यों में इतनी गहराई से जुड़ जाएगा कि अपने निजी व्यक्तिगत नुकसान को भी कोई महत्व नहीं देगा। मनुष्यता के लिए समर्पित व्यक्ति के मनोभाव भी उदात्त स्वरूप ग्रहण करने लगते हैं और यही उसके कर्मयोग के विस्तार में सहायक होते हैं। संकीर्ण व ओछी छिछली मानसिकता का व्यक्ति दूसरे के दुख में सुख का आनंद लेगा और अपने विकास के सारे रास्ते बंद कर लेगा। इसके विपरीत उदार मानवीय दृष्टिकोण रखने वाला व्यक्ति दूसरे की आंख का आंसू पोंछ कर सुख का अनुभव करेगा अर्थात् ज्यों–ज्यों व्यक्ति का आत्म विस्तार होता जाएगा उसी अनुपात में वह अपने–पराये की संकीर्णता से उबरने लगेगा।

यही आत्म का विस्तार है कि व्यक्ति एक परिवार, एक समाज, एक राज्य, एक राष्ट्र से आगे निकल कर पूरी मानव जाति की चिंताओं सरोकारों से अपने को इतनी गहन, संपृक्ति भाव से जोड़ लेता है कि उसे निजी दुख–दर्द गौण लगने लगते हैं। उसके हृदय की विशालता व उदारता उसे ऐसी व्यापक दृष्टि प्रदान करती है कि वह व्यक्तिगत बाधाओं–कठिनाइयों से न तो विचलित होता है और न ही किसी प्रकार के संताप से पीड़ित होता है। समूचे विश्व को अपने 'आत्म' में सम्मिलित करना ही सही मायने में आत्म विस्तार है। यही दृष्टिकोण की व्यापकता व चरित्र की उदात्तता होती है कि सतही सांसारिक विपदाएं–चिन्ताएं अपना प्रभाव खोने लगती हैं। व्यक्ति का आत्म जितना विस्तृत, व्यापक व उदात्त होता जाएगा उसके सुख का आकार भी उसी अनुपात में बढ़ता जाएगा जो अंततः उसे सुखी व शांत करने में मददगार सिद्ध होगा।

राजेन्द्र सहगल
राजभाषा अधिकारी

संरक्षक
ए.के.सिंघल
सदस्य

www.cercind.gov.in

संपादक मंडल
सनोज कुमार झा, सचिव
पी. राममूर्ति, सहायक सचिव
कमल किशोर, सहायक प्रमुख
राजेन्द्र सहगल, राजभाषा अधिकारी

कृपया इस पते पर अपनी प्रतिक्रिया भेजें :
केन्द्रीय विद्युत विनियामक आयोग
भूतल, चन्द्रलोक बिल्डिंग, 36 जनपथ,
नई दिल्ली–110001
Email : info@cercind.gov.in